प्राथमिक कक्षाओं में सृजनात्मकता का विकास

मनीषा तनेजा पाहुजा*

सृजनात्मकता, मनुष्य को प्रकृति की सर्वोत्तम देन है। बच्चों में सृजनात्मकता के लक्षण शीघ्र ही दृष्टिगत होने लगते हैं। अनुकूल वातावरण न मिल पाने की स्थिति में कितनी ही प्रतिभाएँ विलुप्त हो जाती हैं। विद्यालयों में भी सृजनात्मकता के विकास के लिए बहुत प्रयास हो रहे हैं, परंतु इसे तीव्र गति प्रदान करने हेतु प्राथमिक कक्षाओं के अध्यापकों को मार्गदर्शन की आवश्यकता है। इस प्रपत्र में सृजनात्मक बच्चों की पहचान के लक्षण बताए गए हैं, कक्षा-कक्ष में किस प्रकार के क्रियाकलापों के माध्यम से प्राथमिक कक्षाओं के बच्चों की सृजनात्मकता का विकास किया जा सकता है आदि बिंदुओं पर चर्चा की गई है।

मनुष्य की प्रकृति प्रदत्त सभी शक्तियों में सृजनशीलता सर्वाधिक विशिष्ट है। इसी क्षमता के आधार पर मनुष्य प्रकृति के रहस्यों को हल करने, अतल की गहराइयों को मापने, अपनी अनुभूतियों को कलात्मक अभिव्यक्ति देने और अपनी समस्याओं को विविध माध्यमों से सुलझाने में समर्थ हुआ है। आधुनिक युग की प्रगति वैज्ञानिक उपागमों एवं प्रौद्योगिकी के कारण ही संभव हो पाई है। संगीत, चित्रकला, कविता सभी हमारे जीवन को नए अर्थ प्रदान करते हैं। ये सब सृजनात्मकता के ही उत्पाद हैं।

सृजनात्मकता एक ऐसी योग्यता है जो व्यक्ति को विद्वतापूर्ण नवीन ढंग से किसी समस्या का समाधान सोचने व विचार करने योग्य बनाती है। प्रचलित ढंग से हटकर किसी नए ढंग से चिंतन करने तथा कार्य करने की योग्यता ही सृजनात्मकता है। डीहन तथा हेविंगहर्स्ट (Dehan and Havighurst) के अनुसार, सृजनात्मकता वह विशेषता है जो किसी नवीन व वांछित वस्तु के उत्पादन की ओर प्रवृत्त करे। यह नवीन वस्तु संपूर्ण समाज के लिए नवीन हो सकती है अथवा उस व्यक्ति के लिए नवीन हो सकती है जिसने उसे प्रस्तुत किया है।

अतः स्पष्ट है कि सृजनात्मकता का संबंध मुख्य रूप से मौलिकता या नवीनता से है। यह एक ऐसी मौलिक कृति होती है जो किसी कार्य को करने के लिए आत्म-प्रेरणाओं को प्रदर्शित करती हो।

सृजनात्मकता की संकल्पना को समझने के उपागम

सृजनात्मकता की संकल्पना को समझने के चार उपागम हैं। इन्हें, अंग्रेजी के 4P (Product, Process Person & Press) के द्वारा परिभाषित किया जा सकता है—

**अतिथि प्रवक्ता*, मंडलीय शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान, घुम्मनहेड़ा, नयी दिल्ली 110073

© NCERT not to be republished

1. सृजनात्मक विचार (Product)
2. सृजनात्मकता की प्रक्रिया (Process)
3. सर्जक व्यक्ति (Person)
4. परिवेश जिसमें सृजनात्मकता प्रकट होती है (Press)

सर्जनात्मक विचार

किसी उत्पाद में नवीनता और उपयोगिता का सम्मिश्रण होना चाहिए, तभी उसे सृजनात्मकता के रूप में माना जा सकता है। नवीनता व उपयोगिता केवल सतही नहीं होनी चाहिए, उसमें कुछ नया दृष्टिगत होना चाहिए। प्रत्येक वर्ष अलग-अलग निर्माता अपनी किस्म के टेप-रिकॉर्डर और ट्रांजिस्टर बनाते हैं। उनमें एक-दूसरे में अधिक अंतर न होने के कारण उन्हें सृजनात्मक नहीं कहा जा सकता। लेकिन जिस व्यक्ति के मस्तिष्क में टू-इन-वन अर्थात् टेप-रिकॉर्डर को ट्रांजिस्टर के साथ मिलाने का विचार आया, वह विचार सृजनात्मक था तथा वह कृत्य भी सृजनात्मक था। सृजनात्मक रूप में इसे इसलिए स्वीकार किया जा सकता है क्योंकि ग्राहक को दो यंत्रों का लाभ एक यंत्र से मिला और इसे नवीनता तथा उपयोगिता दोनों के अंतर्गत माना जा सकता है।

सृजनात्मकता की प्रक्रिया

सृजनात्मक प्रक्रिया का प्रारंभ उस कमी को अनुभव करने से होता है, जो इसके प्रयास को शुरू कराता है। वास्तव में सृजनात्मक प्रक्रिया उसी कमी को अनुभव करने से प्रारंभ होती है जिसे व्यक्ति देखता है और उस अंतराल को भरने और लुप्त हुए तत्वों की आपूर्ति के प्रयास करता है।

सृजनात्मक विचार प्रक्रिया को सामान्य समस्या समाधान प्रक्रिया के रूप में सामान्यतः चार चरणों में स्पष्ट किया गया है—

(i) तैयारी (Preparation)— तैयारी का अर्थ है समस्या को समझना, उसका विश्लेषण करना, उससे संबंधित आँकड़े एकत्रित करना, विभिन्न तरीकों को अपनाना और प्रश्न उठाना। जब हम समस्या का समाधान नहीं निकाल पाते तो हमारे मन में कुंठा उत्पन्न हो सकती है।

(ii) उद्‌भवन (Incubation)— उद्‌भवन एक ऐसा समय होता है जब प्रयास को छोड़कर समस्याओं को अचेतन मन के सुपुर्द कर देते हैं। यह प्रयोजनमूलक तनावमुक्त समय कहलाता है।

(iii) प्रदीपन (Illumination)— उद्‌भवन के पश्चात सामान्यतः प्रदीपन आता है। यह 'अहा' का क्षण है जिसे हम सामान्यतया सृजनात्मकता के साथ जोड़ते हैं।

(iv) प्रमाणन (Verification)— प्रमाणन की अवस्था में विचारों और हल का परीक्षण किया जाता है और यह जाँच की जाती है कि वह समाधान अथवा हल कहाँ तक ठीक है और उसको क्या रूप देना है?

सर्जक व्यक्ति

एक सर्जक व्यक्ति कई योग्यताओं और अनुकूल व्यक्तित्व-विशेषताओं का उत्पाद है। अपेक्षित योग्यताओं के अभाव में उत्तम प्रकार के सर्जनात्मक कार्य की आशा करना कठिन है। किंतु केवल योग्यताएँ अपने-आप में पर्याप्त नहीं हैं, व्यक्ति की कार्य के प्रति प्रतिबद्धता भी बहुत महत्व रखती है।

परिवेश जिसमें सृजनात्मकता प्रकट होती है

सृजनात्मकता की प्रकृति को समझने के लिए अनुकूल परिवेश आवश्यक है। एक सर्जक व्यक्ति

© NCERT not to be republished

को यदि अनुकूल वातावरण न मिले तो भी उसकी सृजनात्मकता निस्तेज हो सकती है। सृजनात्मकता के लिए जितना अनुकूल वातावरण होगा, व्यक्ति उतनी ही अधिक अपनी सृजनात्मकता को प्रदर्शित करेगा।

सृजन का आधार चिंतन है, ऐसा चिंतन जिसमें सोचने के वांछित अवसर मिलें। चिंतन दो प्रकार का हो सकता है— प्रथम, अभिसारी चिंतन (convergent thinking) द्वितीय, अपसारी चिंतन (divergent thinking)। अभिसारी चिंतन की प्रक्रिया सरल और यांत्रिक होती है, जबकि अपसारी चिंतन में सोचने के पर्याप्त अवसर होते हैं। उदाहरणस्वरूप, यदि एक विशेष क्रम में कुछ संख्याएँ दी जाएँ और अगली संख्या देने के लिए कहा जाए तो यहाँ केवल एक ही उत्तर सही होगा—

5, 7, 9, _____, 13

यहाँ स्पष्ट है कि उत्तर 11 ही होगा। अतः यह अभिसारी चिंतन (convergent thinking) प्रदर्शित करता है।

इसके विपरीत यदि प्रश्न पूछा जाए कि विद्यालयों में परीक्षाएँ हटा दी जाएँ तो क्या होगा? तो इसमें व्यक्ति का कोई एक निश्चित उत्तर नहीं हो सकता। प्रश्न के स्वरूप के कारण व्यक्ति का मन अनेक दिशाओं की ओर जाएगा और उसे बहुत सारे उत्तर प्राप्त होंगे। अतः यह अपसारी चिंतन (divergent thinking) का उदाहरण है।

सृजनात्मकता के पहलू

गिलफोर्ड (1967) तथा टॉरेंस (1970) द्वारा सृजनात्मकता के विभिन्न पहलुओं का अध्ययन विस्तृत रूप से किया गया। ये पहलू हैं—

1. धाराप्रवाहिता (Fluency)— अनेक प्रकार के विचारों की खुली अभिव्यक्ति (unrestricted expression) धाराप्रवाहिता कहलाती है। मनोवैज्ञानिकों के अनुसार धाराप्रवाहिता का संबंध शब्द साहचर्य स्थापित करने तथा शब्दों की अभिव्यक्ति से संबंधित होता है।
2. लचीलापन (Flexibility)— समस्या के समाधान के लिए विभिन्न ढंगों एवं तरीकों को अपनाया जाना लचीलापन कहलाता है। इससे यह ज्ञात होता है कि व्यक्ति समस्या का समाधान कितने विविध तरीकों से करना जानता है।
3. मौलिकता (Originality)— समस्या के समाधान के लिए व्यक्ति द्वारा दी गई अनुक्रियाओं का अनोखापन (uniqueness) मौलिकता कहलाता है। ऐसा विचार प्रकट करने की योग्यता मौलिकता है जो लोग सोच नहीं पाते या वे असामान्य, अलग हटकर और चतुर सोच व्यक्त करते हैं।
4. विस्तारण (Elaboration)— विस्तारण एक ऐसी योग्यता है जिसमें व्यक्ति ऊँचे-ऊँचे विचारों को एक साथ संगठित कर उसका अर्थपूर्ण ढंग से विस्तार करता है और पुनः नए विचारों को जन्म देता है। मौलिकता और विस्तारण अपसारी सोच के दो महत्वपूर्ण पहलू हैं। जिन समस्याओं का केवल एक हल नहीं होता, वहाँ व्यक्ति को अपसारी चिंतन का सहारा लेना पड़ता है। वह विभिन्न विकल्पों पर विचार करता है। अंततः यह प्रक्रिया उसे सही उत्तर की ओर ले जाती है। अतः एक व्यक्ति को समस्या समाधान में अपसारी सोच से आरंभ करके बाद में अभिसारी सोच पर आना होता है।

© NCERT not to be republished

प्राथमिक कक्षाओं में सृजनात्मकता की स्थिति

बच्चे जिज्ञासा, सहज और स्वतंत्र अभिव्यक्ति तथा कल्पना आदि गुणों के साथ विद्यालय में प्रवेश करते हैं, किंतु एकरूपता, अनुरूपता और मानकीकरण के बढ़ते दबावों और माँगों से यह धीरे-धीरे कम होती जाती है। उनकी स्वतंत्र प्रवाही सृजनात्मकता तर्कसंगत विचारों में बदल जाती है। यदि बच्चों को असाधारण प्रश्न पूछने, विचारों की नए ढंग से जाँच-पड़ताल करने, समस्या समाधान के लिए नए तरीके अपनाने, कल्पना करने, चीज़ों से खेलने और परंपरागत विषयों को व्यवहार में लाने के लिए भिन्न-भिन्न तरीके अपनाने की अनुमति न दी जाए तो उनकी सृजनात्मकता का स्तर क्षीण हो सकता है। शिक्षाविदों द्वारा देश में बच्चों की शिक्षा में सृजनात्मकता के महत्व को लंबे समय से अनुभव किया जा रहा है। शिक्षा आयोग की रिपोर्टों, राष्ट्रीय शिक्षा नीति और कार्यवाही योजना (1986,1992), रा.शै.अ.अ.प्र.प. पाठ्यचर्याओं, सभी ने बच्चों में स्वतंत्रता, मौलिकता, प्रश्न पूछने का साहस, वैज्ञानिक सोच और संक्षेप में सृजनात्मक रूप से सोचने के कौशलों और योग्यताओं के विकास पर बल दिया है।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 के 'सीखना और ज्ञान' पाठ के अंतर्गत बताया गया है कि ज्ञान निर्माण में विद्यार्थियों की सहभागिता और रचनात्मकता को बढ़ावा देना चाहिए। *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005* में विज्ञान-शिक्षा के संबंध में बताया गया है कि विज्ञान शिक्षा विद्यार्थियों में रचनात्मकता और जिज्ञासा को संपोषित करने वाली हो, विशेषकर पर्यावरण के संदर्भ में। यद्यपि विद्यालयों में सृजनात्मकता के विकास के लिए बहुत प्रयास किए जाते हैं तथापि ऐसे भी दृष्टांत सामने आते हैं, जैसे— 'जैसा अध्यापक ने कहा है, वही करो' वाली अभिवृत्ति। एक अन्य उदाहरण देखते हैं, चित्रकला के पाठ के दौरान एक कक्षा में अभ्यास के तौर पर बच्चों को प्राकृतिक चित्रण करना था। बच्चों ने अपनी समझ एवं कल्पनाशक्ति के आधार पर चित्र बनाए। सूर्य को सबने पीले रंग से सजाया। एक बच्चे ने उसे सुबह की लालिमा का रूप दिया। अध्यापिका ने और बाकी बच्चों ने उसका मज़ाक बनाते हुए, उससे पीला रंग भरने को कहा। यहाँ पर बच्चे पर पड़ने वाले प्रभाव पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए। इस प्रकार बच्चा अपनी सृजनात्मकता को तो खो ही देगा।

प्रायः अध्यापक सोचते हैं कि सृजनात्मक चिंतन से कक्षा में केवल अनुशासन ही उत्पन्न होता है। उनके अनुसार बच्चों के ये असामान्य विचार कक्षा में बाधा उत्पन्न करते हैं। यदि बच्चों को विभिन्न दिशाओं में सोचने के लिए प्रोत्साहित किया जाएगा तो शिक्षण-कार्य और अधिक चुनौतीपूर्ण हो जाएगा। वास्तव में शिक्षकों को ऐसी परिस्थितियों का सामना करने में सक्षम होना चाहिए। उन्हें बच्चों में सृजनात्मकता का विकास करने हेतु प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए।

बच्चों में सृजनात्मकता को विकसित एवं प्रोत्साहित करने संबंधी विधियाँ/तकनीकें

बच्चों में सृजनात्मकता को विकसित एवं प्रोत्साहित करने संबंधी मुख्य विधियाँ/तकनीकें इस प्रकार हैं—

1. मस्तिष्क उद्वेलन विधि (Brain Storming Method)— इस विधि में विद्यार्थियों को समस्या समाधान की स्थिति प्रदान की जाती है तथा उन्हें हर उस विचार पर विमर्श करने को कहा जाता है जो उनके मस्तिष्क में आता

है। उन्हें असामान्य सुझाव देने के लिए भी प्रोत्साहित किया जाता है। उन्हें अपने सुझावों की क्रियात्मकता का विश्लेषण तथा मूल्यांकन करना होता है।

2. समस्या समाधान विधि (Problem Solving Method)— समस्या समाधान विद्यार्थियों में सृजनात्मकता का विकास करने की एक महत्वपूर्ण तकनीक है। जीवन में सफलता, प्रसन्नता और कुशलता काफ़ी हद तक समस्या समाधान पर निर्भर करती है।
3. सामूहिक चर्चा (Group Discussion)— सामूहिक चर्चा में अपसारी चिंतन (divergent thinking) सृजनात्मकता का आधार है। इसके अंतर्गत समस्या में निहित संबंधों का विश्लेषण, तुलना, मूल्यांकन और निष्कर्ष निकालना सम्मिलित है।
4. खेल विधि (Play-way Method)— खेल विधि से अभिप्राय उन सभी विधियों से है जो विद्यालयी कार्य को खेल में परिवर्तित कर देती हैं। ये विधियाँ विद्यालय के कार्यों में स्वतंत्रता, मनोरंजन तथा उन्हें स्वयं करने पर बल देती है। किंडरगार्टन, मांटेसरी, डाल्टन इत्यादि विधियाँ इसके उदारहण हैं।
5. ज्ञान प्रतियोगिता (Quiz)— ज्ञान प्रतियोगिता के अंतर्गत विभिन्न विषयों अथवा किसी विशिष्ट विषय पर एक समूह के समक्ष प्रश्न प्रस्तुत किए जाते हैं। एक प्रश्न का उत्तर देने में अथवा एक समाधान निकालने में दिखायी गई शीघ्रता विवेकपूर्ण और कभी-कभी मौलिक चिंतन पर आधारित होती है।

बच्चों में सृजनात्मकता के विकास में अध्यापक की भूमिका

सबसे पहले आवश्यकता है, अध्यापक को सशक्त करने की। अध्यापक बच्चे के व्यवहार का निरीक्षण कर सकते हैं और नीचे दी गई सूची का उपयोग कर बच्चों में निहित सृजनात्मकता की पहचान कर सकते हैं क्योंकि प्रत्येक बच्चा सृजनकर्ता होता है। यदि अध्यापक चाहें तो इसमें संशोधन करके अन्य व्यवहारों को भी सम्मिलित कर सकते हैं। बच्चा—

- एक विषय पर अपनी कक्षा अथवा आयु के अन्य विद्यार्थियों से अधिक विचार प्रस्तुत करता है।
- उन वस्तुओं पर ध्यान देता है जिन पर उसकी कक्षा के अन्य बच्चे ध्यान नहीं देते।
- अपने सहपाठियों के विचारों का विश्लेषण करता है।
- कक्षा के अन्य विद्यार्थियों के उत्तरों या विचारों पर संशोधन या सुधार करने के लिए उत्सुकता दर्शाता है।
- ऐसे प्रश्न पूछता है जो अन्य विद्यार्थियों से आमतौर पर भिन्न होते हैं।
- अपनी रुचि के निर्दिष्ट कार्य पर परिश्रम करता है।
- किसी वस्तु को सुधारने के लिए कहा जाए तो उस पर अपने विचार प्रस्तुत करता है।
- स्वतंत्र विचार तथा निर्णय प्रस्तुत करता है और स्वतंत्र रूप से कार्य करना पसंद करता है।
- वाद-विवाद, परिचर्चाओं, कक्षा में पूछे जाने वाले प्रश्नों आदि में दृढ़ और नवीन तथ्य प्रस्तुत करता है।
- अपने सहपाठियों के उत्तर में आए अंतराल को भरने में उत्सुकता दर्शाता है।
- किसी विषय पर सुधार के अवसर मिलने पर कई सुझाव देता है।

© NCERT not to be republished

- अध्ययन के दौरान अपने विषयों के संबंध में रूढ़िगत विचारों और पद्धतियों को नए अर्थ देने की प्रवृत्ति व्यक्त करता है।
- किसी चित्र को बनाने या रंगसज्जा में कई विचारों को सम्मिलित करने का प्रयास करता है।
- ऐसे खेलों या अन्य कार्यकलापों में रुचि दिखाता है, जिनमें सूझ-बूझ की आवश्यकता हो।
- पुस्तकों में जो प्रयोग दिए गए हैं, उनसे कुछ भिन्न प्रयोग करने का प्रयास करता है।
- कविताओं और कहानियों आदि की रचना में रुचि लेता है।
- अपने विचार कई बार दिवास्वप्न जैसे और काल्पनिक रूप में प्रस्तुत करता है।
- अपनी पसंद का कार्य करने या अपने विचारों को स्वीकृत कराने के लिए अपने अध्यापकों और विद्यार्थियों को तर्क प्रस्तुत कर अपने पक्ष में कर लेता है।
- तथ्य का पता लगाने और स्मरण पर आधारित प्रश्नों— क्या, कहाँ, कब के स्थान पर क्यों और कैसे युक्त विचारोत्तेजक प्रश्न पूछना पसंद करता है।
- अपने ऊपर बहुत अधिक नियंत्रण पसंद नहीं करता।

सृजनात्मक अंतःशक्ति से संबद्ध विशेषताओं पर एक सफल प्रेक्षण के लिए अध्यापकों के लिए यह आवश्यक होगा कि वे कक्षा और कक्षा के बाहर ऐसी स्थितियाँ उत्पन्न करें, जहाँ बच्चों को अपने व्यवहार में इन विशेषताओं को प्रदर्शित करने के न केवल अवसर दिए जाएँ, अपितु उचित प्रेरणा भी दी जाए।

अध्यापकों द्वारा अनुकरणीय विविध क्रियाकलाप

- पाठ पढ़ाते समय बच्चों को सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए प्रेरित करें।
- अधूरी सूचना का पता लगाने और उसे पूरा करने के प्रयास के लिए उन्हें प्रोत्साहित करें।
- उनके कल्पनात्मक विचारों का आदर करें।
- विचारों की गहराई तक छानबीन करने, जो सर्वविदित हो उसे आगे बढ़ाने और कुछ नया खोज निकालने के लिए प्रोत्साहित करें।
- चर्चा के अंतर्गत चित्रकारी, काल्पनिक कथाओं आदि के माध्यम से जैसा भी संदर्भ हो, विस्तारपूर्वक बताने के लिए कहें।
- दूसरों द्वारा प्रस्तुत विचारों को एक नए संदर्भ में पुनर्गठित करने, पुनः संजोने और देखने के लिए कहें।
- कक्षा में बच्चों के समक्ष एक समस्या प्रस्तुत करें और उसका हल निकालने के लिए यथासंभव उपाय आमंत्रित करें।
- किसी वस्तु को सुधारने हेतु सुझाव देने के लिए कहें।
- कक्षा में शब्द निर्माण, वाक्य पूरा करना, शब्दों के पर्याय और विपरीतार्थक खोजना जैसे शैक्षिक खेल आयोजित करें।

सृजनात्मकता की पहचान के लिए प्रश्नों का प्रयोग भी किया जा सकता है। सर्जनात्मक सोच को उत्पन्न करने हेतु प्रारंभिक विद्यालय के अध्यापकों के लिए प्रश्न पूछने संबंधी निम्नलिखित दिशानिर्देश सुझाए जा सकते हैं—

- पाठ के विभिन्न स्तरों पर जटिल प्रश्नों और स्थितियों को प्रस्तुत करें और उनके समाधान ढूँढ़ने के लिए बच्चों को प्रोत्साहित करें।

© NCERT not to be republished

- वस्तुओं/सूचनाओं की विभिन्न और नए तरीकों से जाँच करने के लिए विद्यार्थियों से उत्तेजक प्रश्न पूछें।
- ऐसे विद्यार्थियों पर ध्यान दें जो बहुत अधिक प्रश्न पूछें और साथ-साथ उन पर भी जो कठिन, उलझन पैदा करने वाले और असामान्य प्रश्न पूछते हैं।
- कठिन, उलझन पैदा करने वाले और असामान्य प्रश्नों को आदर से स्वीकार करना चाहिए।
- कल्पनात्मक विचारों की उपेक्षा करने के स्थान पर उनका आदर करना चाहिए।
- जो विद्यार्थी चुनौतियों का सामना करने, कठिन कार्यों और प्रश्नों को हल करने की प्रवृत्ति को व्यक्त करें, उन पर ध्यान देना चाहिए।
- अपने प्रश्नों का प्रयोग इस प्रकार से करें कि बच्चों में विभिन्न तथ्यों के लिए जिज्ञासा, पूछताछ और प्रयोग की अनुभूति उत्पन्न हो।

सृजनात्मक अध्यापक के व्यक्तित्व की प्रमुख विशेषताओं में जोखिमों को उठाना और उनका सामना करने की इच्छा, लगनशीलता, नवीन अनुभवों के प्रति ग्राह्यता, कार्य के प्रति वचनबद्धता, उन्नत आंतरिक प्रेरणा, चुनौतियों का सामना करने की क्षमता, विचारशीलता, निर्णय लेने की स्वतंत्रता, शौर्य का प्रदर्शन, उत्कृष्ट कार्य की आदतें, सतत प्रयास हेतु क्षमता, प्रयत्न करने में निरंतरता, सोचने में रुचि, विचारों में हेर-फेर और खिलवाड़ और वर्तमान स्वीकार्य प्रणालियों में सुधार की इच्छा आदि सम्मिलित हैं।

प्रारंभिक विद्यालयों में सृजनात्मक परियोजनाओं के उदाहरण

अंग्रेज़ी की पाठ्यपुस्तक *मैरीगोल्ड* (कक्षा 1) में 'ए हैप्पी चाइल्ड' कविता शिक्षण के दौरान बच्चों का परिचय विभिन्न संवेगों से करवाने का प्रयास एक छात्राध्यापिका के द्वारा बड़े ही रोचक ढंग से किया गया। बच्चों को विभिन्न संवेगों को प्रकट करने वाले चित्र दिए गए तथा 'हाउ डू यू फ़ील' गतिविधि करवायी गई। बच्चों से पूछा गया कि जब आपको नए कपड़े मिलते हैं तो आपको कैसा लगता है? बच्चे अपनी पंसद का चित्र प्रस्तुत करते हैं। इसी तरह 'जब आपको चोट लगती है', जब आप बीमार होते हो, जब आपकी पसंद का खाना नहीं बनता', इत्यादि प्रश्नों के माध्यम से खुश रहने के सकारात्मक बिंदु को अभिप्रेरित करते हुए 'खुश रहना' (happiness) को समालोचनात्मक चिंतन (critical thinking) से जोड़ते हुए छात्राध्यापिका ने पूछा कि 'खुश रहना' और 'दूसरों को खुश रखना' किस-किस को अच्छा लगता है? इस बिंदु पर चर्चा करते हुए बच्चों में समालोचनात्मक चिंतन का भी विकास हुआ। यही एक अध्यापक की सृजनात्मकता है कि न केवल पाठ-शिक्षण किया जाए, अपितु जीवन-कौशलों के प्रति भी छात्र-छात्राओं को सजग बनाया जाए।

कक्षा 1 में गणित शिक्षण के अंतर्गत *गणित का जादू* पाठ्यपुस्तक से 'सम-विषम संख्या' समझाने के लिए एक बहुत ही रुचिकर गतिविधि करवायी गई। एक अध्यापिका ने कक्षा के सभी बच्चों को पंक्तिबद्ध किया तथा सभी को लाल और पीले कागज़ पर लिखी लिखित संख्याएँ प्रदान की। विषम संख्या वालों (लाल रंग की संख्याएँ) को खड़े रहने का निर्देश दिया गया तथा सम संख्या वालों (पीले रंग की संख्याएँ) को बैठने का निर्देश दिया गया। इस गतिविधि से प्रशिक्षु अध्यापिका ने यह स्पष्ट किया कि सम-विषम संख्याओं के बीच में

© NCERT not to be republished

एक-एक संख्याएँ छोड़ी जाती है। इसके बाद सम और विषम संख्याओं के अलग-अलग समूह बनाने से 'सम-विषम' की संकल्पना स्पष्ट की गई। प्रशिक्षु अध्यापिका ने 6–6 बच्चों के समूह बनाकर उन्हें संख्याएँ बनाकर प्रदर्शित करने की गतिविधि बड़े रोचक ढंग से करवायी।

हिंदी की पाठ्यपुस्तक *रिमझिम-2* (कक्षा 2) में 'ऊँट चला' कविता शिक्षण करते समय एक प्रशिक्षु अध्यापिका ने पाठ को रोचक बनाते हुए ऊँट से संबंधित एक टंग-ट्विस्टर गतिविधि करवायी— कुछ ऊँट ऊँचा, कुछ पूँछ ऊँची, कुछ ऊँचे ऊँट की पीठ ऊँची। यह गतिविधि अवधान-केंद्रण, उच्चारण में शुद्धता तथा मनोरंजन हेतु करवायी गई। इतना ही नहीं ऊँट की ऊँचाई को गणित से भी जोड़ते हुए अनेक वस्तुओं के नाम प्रशिक्षु अध्यापिका द्वारा बोले गए और बच्चों ने 'ऊँचाई' की संकल्पना को ध्यान में रखते विभिन्न वस्तुओं की तुलना ऊँचाई से की। बच्चों से ऊँट पर चढ़ने के नए-नए तरीके भी पूछे गए। प्रस्तुति उदाहरण में यह स्पष्ट है कि सृजनात्मकता के विकास हेतु विशेष अतिरिक्त शिक्षण की आवश्यकता नहीं, अपितु विषयवस्तु शिक्षण के दौरान भी बच्चों में सृजनात्मकता विकसित की जा सकती है।

पर्यावरण अध्ययन की पाठ्यपुस्तक *आस-पास* (कक्षा 4) में दिए गए 'फुलवारी' पाठ का शिक्षण करते समय एक प्रशिक्षु अध्यापिका ने बड़े ही अच्छे ढंग से स्मार्ट क्लास का प्रयोग करते हुए बच्चों को मधुबनी चित्रकला से परिचित करवाया तथा उसी की तरह बच्चों को भी डिज़ाइन बनाने के लिए प्रोत्साहित किया। इतना ही नहीं, बच्चों के द्वारा बनाए गए चित्रों को पी.टी.एम. में प्रदर्शनी के माध्यम से सबके सम्मुख लाकर उनकी प्रतिभा को सामने लाने का एक अच्छा प्रयास भी किया गया।

कक्षा में सृजनात्मकता का विकास विभिन्न माध्यमों से किया जा सकता है। प्राकृतिक भू-दृश्य से संबंधित चित्रों को नए ढंग से प्रस्तुत करने में बच्चे अपनी कल्पनाशक्ति एवं सृजनात्मकता का भरपूर प्रयोग करते हैं। प्रतिदिन की गतिविधियों एवं घटनाओं पर चर्चा करते हुए उन्हें चित्र बनाकर रंग भरने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है। अनेक कार्यानुभव संबंधी क्रियाकलाप, जैसे— कताई-बुनाई, कुशन और डस्टर तैयार करना, लैंप-शेड तैयार करना आदि सृजनात्मकता का विकास तो करते ही हैं, साथ ही कौशलों का विकास भी बच्चों में करने में सक्षम हैं। सृजनात्मक लेखन के माध्यम से भी अंदर छिपी प्रतिभा को विशेष रूप से बाहर प्रकट किया जा सकता है।

निष्कर्ष

यद्यपि बच्चों में सृजनात्मकता का विकास करना अध्यापकों के लिए एक चुनौतीपूर्ण कार्य है, परंतु यह कार्य असंभव नहीं है। सृजनात्मकता का विकास करना भारत को विकसित देशों की श्रेणी में लाकर खड़ा करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। भारत में अनेक सर्जक हैं। बाल्यकाल में अनेक बच्चों की सृजनात्मकता तो इसलिए भी नष्ट हो जाती है क्योंकि उनके परिवार उन्हें उचित मार्गदर्शन नहीं प्रदान कर पाते तथा विद्यालयों में अध्यापकों द्वारा भी उन्हें किसी प्रकार की कोई सहायता नहीं प्राप्त हो पाती। परिणामस्वरूप कितनी ही प्रतिभाएँ फलित होने से पूर्व ही नष्ट हो जाती हैं। अध्यापकों का परम कर्तव्य बनता है कि वे स्वयं को सर्जक अध्यापक के रूप में

© NCERT not to be republished

प्रस्तुत करें तथा कक्षा में विद्यार्थियों की सृजनात्मकता को विकसित करने में अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करें। विद्यालयी स्तर पर अध्यापकों द्वारा यदि अपनी भूमिका का निर्वहन उचित प्रकार से किया जाएगा तो निश्चित तौर पर हमारे देश को विश्वगुरु बनने से कोई नहीं रोक पाएगा।

संदर्भ

गुलाटी, सुषमा. 2009. *सृजनात्मकता के लिए शिक्षा*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नयी दिल्ली.

मंगल, एस.के. 2015. *एसेंशियल्स ऑफ़ एजुकेशन*. पी.एच.आई. लर्निंग प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली.

मानव संसाधन विकास मंत्रालय.1986. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 1986*. मानव संसाधन विकास मंत्रालय, नयी दिल्ली.

रा.शै.अ.प्र.प.. 2006. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नयी दिल्ली.

वालिया, जे.एस. 2019. *शिक्षा मनोविज्ञान की बुनियादें*. अहम पाल पब्लिशर्स. जालंधर, पंजाब.

सिंह, अरूण कुमार. 2018. *शिक्षा मनोविज्ञान*. भारती भवन पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, हरियाणा.

https://mhrd.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/document-reports/NPE1986_H.pdff

https://johnparankimalil.wordpress.com

shodhganga.inflibnet.ac.in> bitstream chapter-II Theoretical Background Page No.15 (डीहन व हेविंगहर्स्ट)

shodhganga.inflibnet.ac.in> chapter-II Theoretical Background Page No.25 (गिलफोर्ड, 1967 व टॉरेंस, 1970)

© NCERT not to be republished